देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह का आठवाँ हुक्म, दिल से देना यानी ज़कात देना।

हज़रत ईसा अल-मसीह का आठवाँ हुक्म, दिल से देना यानी ज़कात देना।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के हर पैरोकार की ज़िम्मेदारी है कि वह ख़ुदा के काम के लिए माली तौर पर इमदाद करे। जब ख़ुदा हमें फ़राख़दिली से देता है तो, इसलिए हमें भी उसके कामों के लिए खर्च करना चाहिए। आज हम आठ हुक्मों में से आख़िरी हुक्म सीखेंगे — दिल से **देना**। यह हुक्म इंजील शरीफ़ के मरक़ुस 12:41–44 से लिया गया है।

आज के सबक़ शुरू करने से पहले, मैं बनी-इसराईल की तहज़ीब के बारे में थोड़ी बात बताना चाहता हूँ। तौरात शरीफ़ में ख़ुदा ने अपने लोगों को यरूशलेम में बैतुल मुक़द्दस बनाने का हुक्म दिया, जहाँ वे इबादत के लिए आया करते थे। इबादत का एक हिस्सा यह भी था कि बैतुल मुक़द्दस के काम के लिए माली इमदाद दी जाए। इस सबक में, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह बैतुल मुक़द्दस के उस हिस्से में बैठे हुए थे जहाँ ये इमदाद व ज़कात दिए जाते थे।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स के मुक़ाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिये डालते हुए देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रक़में डाल रहे थे। फिर एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए। ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है। क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।"

चूँकि यह वाक़िया बहुत मुख़्तसर है, इसलिए मैं इसे एक बार फिर से पढ़ लेता हूँ, ताकि हम इसे अच्छी तरह समझ सकें और याद रख सकें।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स के मुक़ाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिये डालते हुए देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रक़में डाल रहे थे। फिर एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए। ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है। क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद होने के बावुजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।"

आज के सबक़ में हम एक ग़रीब औरत के बारे में पढ़ते हैं, जिसने ख़ज़ाने में बहुत थोड़ी-सी रक़म डाली। इसके बावजूद, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह उसकी इस ज़क़ात से अमीरों की ज़क़ात के मुक़ाबले ज़्यादा ख़ुश हुए। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के लिए देने की नियत, दी गई रक़म से ज़्यादा अहम थी। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया, "इस ग़रीब बेवा ने सब लोगों से ज़्यादा ख़ज़ाने में डाला है।" इसका क्या मतलब था? ज़ाहिर है कि अमीर लोगों ने उस बेवा से ज़्यादा पैसा डाला था। लेकिन उस बेवा ने जो कुछ उसके पास था, सब दे दिया। ख़ुदा को हमारे पैसों की ज़रूरत नहीं है। वह चाहता है कि हम क़ुर्बानी के साथ दें और उस पर भरोसा रखें कि वह हमारी ज़रूरतें पूरी करेगा। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने उस औरत के दिल को देखा और अपने शागिर्दों को बुलाकर उसकी क़ुर्बानी की तरफ़ इशारा करके उसे इज़्ज़त दी।

हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) की तहरीरों में यह हुक्म दिया गया था कि ख़ुदा की क़ौम अपनी आमदनी का दसवाँ हिस्सा, यानी उशर (10%), ख़ुदा को दे। इस सबक़ में हम देखते हैं कि कुछ अमीर लोग बहुत-सा पैसा डाल रहे थे, क्योंकि उनके पास

www.taleemulkalam.org

बहुत पैसा था। ये अमीर लोग अपना फ़र्ज़ी उशर दे रहे थे। लेकिन यह क़ुर्बानी के साथ दी गयी ज़क़ात नहीं थी। हालाँकि वे बहुत दे रहे थे, मगर उनके लिए यह आसान था, क्योंकि उन्हें उस पैसे की ज़रूरत नहीं थी।

इसके बरअक्स, ग़रीब बेवा ने क़ुर्बानी के साथ दिया। उसके पास बहुत कम था, फिर भी उसने जो कुछ उसके पास था, सब ख़ुदा को दे दिया। यह क़ुर्बानी वाली ज़क़ात थी, क्योंकि उसे ज़िंदगी गुज़ारने के लिए उस पैसे की ज़रूरत थी। इस ग़रीब औरत ने ख़ुदा पर पूरा भरोसा किया और जो कुछ उसके पास था, उसे उसे सौंप दिया।

कभी-कभी मैं सुनता हूँ कि सिर्फ़ अमीरों को ही ख़ुदा के काम के लिए देना चाहिए। लेकिन हक़ीक़त यह है कि देना रक़म से ज़्यादा देने वाले के दिल से ताल्लुक़ रखता है। जब हम ख़ुदा के काम के लिए माली तौर पर देते हैं, तो हमारा ईमान बढ़ता है। हम अपने पैसों के मामले में ख़ुदा पर भरोसा करते हैं कि वह आगे भी हमारी ज़रूरतें पूरी करता रहेगा। मैं आपको दावत देता हूँ कि आप ख़ुदा के काम के लिए फ़राख़दिली से देना शुरू करें और इस बात की उम्मीद रखें कि ख़ुदा आपकी ज़रूरतें पूरी करेगा। देने की सबसे मुनासिब जगह आपकी जमाअत है। फिर आपकी जमाअत को मिलकर दुआ करनी चाहिए और ख़ुदा से पूछना चाहिए कि वह इन पैसों को किस तरह इस्तेमाल करना चाहता है, जो वह मुहैया करा रहा है।

इस वाक़िये को पढ़कर, हमें हिर्स यानी लालच के गुनाह की याद आती है, हालाँकि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने अमीरों पर सीधे तौर पर इसका इल्ज़ाम नहीं लगाया। आज के मुआशरे में लालच एक आम गुनाह है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि कोई भी अपने पास जो है, उससे मुतमइन यानी खुश नहीं है। अमीर और ज़्यादा अमीर बनना चाहते हैं, और ग़रीब पैसे को हासिल करना ही ज़िंदगी का सबसे बड़ा मक़सद बना लेते हैं। लेकिन ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने हमें ख़बरदार किया कि हम दो नावों पर सवार नहीं हो सकते। हम एक साथ पैसा और ख़ुदा दोनों की इबादत नहीं कर सकते। हमें अपनी ज़रूरतों के लिए मेहनत करनी चाहिए और अपने ख़ानदान का ख़्याल रखना चाहिए, लेकिन लालच से बचना ज़रूरी है। लालच तब पैदा होता है जब हम ख़ुदा से ज़्यादा, पैसे के पीछे भागते हैं। अगर आपके दिल में लालच है, तो इस वाक़िये में, ग़रीब बेवा की मिसाल पर चलिए! आज अपने दिल का जाइज़ा लीजिए।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने यह नहीं कहा कि अमीरों ने सिर्फ़ अपना उशर देकर गुनाह किया। लेकिन उन्होंने ग़रीब बेवा को हमारे लिए एक नमूना बनाकर पेश किया। हालाँकि वह ग़रीब थी और शायद उसका ख़्याल रखने वाला कोई भी नहीं था, फिर भी इस औरत ने ख़ुदा पर भरोसा किया और जो कुछ उसके पास था, सब उसे दे दिया। उसके ईमान और क़ुर्बानी के साथ दी गई ज़क़ात की वजह से, ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने उसकी तारीफ़ की।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पैरोकार होने के नाते, हमें फ़राख़दिली से देना चाहिए। बराये मेहरबानी इसे अपनी आदत बना लें कि आप अपने आसपास के लोगों के साथ सख़ावत यानी खुले दिल से पेश आएँ। आपकी जमाअत को भी ज़क़ात जमा करनी चाहिए। फिर आपकी जमात को मिलकर दुआ करनी चाहिए कि ख़ुदा की रहनुमाई में इन पैसों का सबसे बेहतर इस्तेमाल कैसे किया जाए। आम तौर पर, ये पैसे ख़ुदा की बादशाहत को आगे बढ़ाने या ग़रीबों की मदद करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। अपनी जमात के लिए दिल खोलकर ज़क़ात दीजिए।

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....